Date 19/05/2020 | Page-1 to 4 |

B.A., PART-Ist
POLITICAL SCIENCE
PAPER-I (BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY)
CH-10 (CONCEPT OF EQUALITY)
LECTURE NO.-32 (THIRTY TWO)

By, OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

स्वतंत्रता और समानता का सम्बंध-

स्वतंत्रता और समानता के पारस्परिक सम्बंध के विषय में विद्वानों के मध्य पर्याप्त मतभेद है। इस सन्दर्भ में दो तरह की विचारधाराएँ हैं-

(i) प्रथम विचारधारा के अनुसार, 'स्वतंत्रता और समानता परस्पर विरोधी हैं।'

(ii) द्वितीय विचारधारा के अनुसार, 'स्वतंत्रता और समानता परस्पर विरोधी नहीं, पूरक है।'

(i) प्रथम विचारधारा के प्रमुख समर्थक विद्वान हैं- डी० टाकविले और लॉर्ड एक्टन। इसके अनुसार स्वतंत्रता और समानता परस्पर विरोधी हैं। इस विचारधारा को मानने वाले के अनुसार स्वतंत्रता अपनी इच्छानुसार कार्य करने की शक्ति का नाम है जबकि समानता का आशय प्रत्येक प्रकार के सभी व्यक्ति समान हैं। इनके अनुसार यदि सभी व्यक्तियों को स्वतंत्रता प्रदान कर दी जाय तो जीवन के परिणाम नितांत असमान होंगे और शक्ति के आधार पर सभी व्यक्तियों को समान कर दिया जाए तो यह समानता व्यक्तिगत स्वतंत्रता को नष्ट कर देगी। लॉर्ड एक्टन का कथन है " समानता की उत्कृष्ट अभिलाषा के कारण स्वतंत्रता की आशा ही व्यर्थ हो गयी है।"

टॉकविले के अनुसार, "समानता, बहुमत की निरंकुशता है।"

इस विचारधारा के समर्थक विद्वानों ने स्वतंत्रता एवं समानता का संकुचित व्याख्या किया है। उनके

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

Saathi

द्वारा स्वतंत्रता एवं समानता के जिस रूप की कल्पना की गयी है, वह रूप न तो समाज में कहीं विद्यमान है और न ही राजनीति विज्ञान उस रूप को स्वीकार किया गया है। यदि समाज में सभी व्यक्तियों को अपनी इच्छा के अनुसार कार्य की स्वतंत्रता दे ही जाय, तो असंतुलन की स्थिति पैदा हो जायेगी और चारों तरफ अराजकता का माहौल व्याप्त हो जायेगा, जिससे समाज में वास्तविक स्वतंत्रता नष्ट हो जायेगी। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों को प्राकृतिक समानता या आय की समानता प्रदान कर दी जाय, तो भी समाज में असंतुलन की स्थिति हो जायेगी और वास्तविक समानता स्थापित करना असम्भव हो जायेगा।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता और समानता के पारस्परिक सम्बंध के विषय में प्रथम विचारधारा उपयुक्त नहीं है।

(11) द्वितीय विचारधारा के अन्तर्गत स्वतंत्रता एवं समानता को एक-दूसरे के पूरक माना गया है। इसके समर्थक विद्वानों के द्वारा स्वतंत्रता एवं समानता की परिभाषा व्यापक अर्थ में किया गया है। उनके अनुसार, स्वतंत्रता जीवन की ऐसी व्यवस्था का नाम है जिसमें व्यक्ति के जीवन पर न्यूनतम प्रतिबंध हों, विशेषाधिकार का नितांत अभाव हो और व्यक्तियों को अपने व्यक्तित्व के विकास हेतु अधिकतम सुविधाएँ प्राप्त हों और समानता आशय ऐसी परिस्थितियों के अस्तित्व से है जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्तियों को व्यक्तित्व के विकास हेतु समान अवसर प्राप्त हों और इस प्रकार उस असमानता का अंत हो सके जिसका मूल कारण सामाजिक विषमता है।

इस प्रकार दोनों का ही उद्देश्य मानवीय व्यक्तित्व का उच्चतम विकास है और इस तरह स्वतंत्रता एवं समानता एक-दूसरे के सहायक और पूरक हैं, परस्पर विरोधी नहीं है।

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

वास्तव में, समानता स्वतंत्रता के आधार रूप में कार्य करता है। एक ऐसे राज्य में जिसमें समानता नहीं है, स्वतंत्रता हो ही नहीं सकती। इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) यदि राजनीतिक समानता नहीं होगी, तो स्वतंत्रता व्यर्थ हो जाएगी और जनता के एक बहुत बड़े भाग को शासन में कोई भागीदारी नहीं होगी।

(ii) यदि वैधानिक समानता नहीं होगी, तो सभी नागरिक स्वतंत्र नहीं रह पाएंगे।

(iii) यदि सामाजिक समानता नहीं होगी, तो स्वतंत्रता कुछ ही व्यक्तियों तक सिमट कर रह जाएगी।

(iv) यदि आर्थिक समानता नहीं होगी, तो धन कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित हो जाएगा और केवल वही वर्ग स्वतंत्रता का लाभ उठा सकेगा।

ऐसी स्थिति में डॉ० आशीर्वादम का यह कथन "फ्रांस के क्रांतिकारी न तो पागल थे और न मूर्ख, जब उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व का नारा लगाया था।", उचित ही प्रतीत होता है।

प्रो० पोलर्ड के अनुसार, "स्वतंत्रता की समस्या का केवल एक हल है और वह हल समानता में निहित है।"

वास्तव में, स्वतंत्रता और समानता मानव जीवन सरिता के दो तट हैं, ये मानव कल्याण रूपी रथ के दो पहिये हैं, सत्य तथा शिव का जो अभिन्न सहयोग है, वही मानवीय जीवन में स्वतंत्रता और समानता का है।

उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता एवं समानता एक-दूसरे के सहायक और पूरक हैं, परस्पर विरोधी नहीं हैं।

Page No.

Scanned with CamScanner

Saathi

Date ___ /___ /_____

सम्भावित प्रश्न:

(i) स्वतंत्रता और समानता के सम्बंधों की विवेचना कीजिए।

(ii) "स्वतंत्रता का आधार समानता है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(iii) "स्वतंत्रता और समानता एक दूसरे की पूरक हैं क्योंकि कुछ समानता के अभाव में स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

Scanned with CamScanner